SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

अल्मा कबूतरी में नारी संघर्ष

हरिणी रानी आगर, (Ph.D.), हिंदी विभाग
शासकीय बिलासा कन्या पी. जी. महाविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
लक्षेश्वरी, हिंदी विभाग
किरोड़ीमल शास. कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
हरिणी रानी आगर, (Ph.D.), हिंदी विभाग
शासकीय बिलासा कन्या पी. जी. महाविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
लक्षेश्वरी, हिंदी विभाग
किरोड़ीमल शास. कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

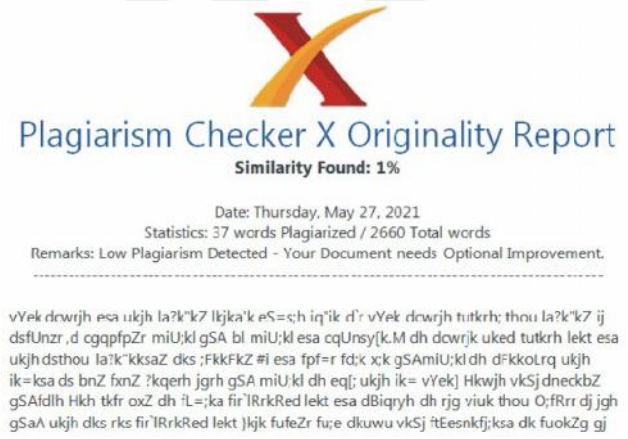

Received on : 27/05/2021
Revised on : -----
Accepted on : 03/06/2021
Plagiarism : 01% on 27/05/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Thursday, May 27, 2021
Statistics: 37 words Plagiarized / 2660 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

शोध सार

मैत्रेयी पुष्पा कृत अल्मा कबूतरी जनजातीय जीवन संघर्ष पर केन्द्रित एक बहुचर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास में बुन्देलखण्ड की कबूतरा नामक जनजाति समाज में नारी के जीवन संघर्षों को यथार्थ रुप में चित्रित किया गया है। उपन्यास की कथावस्तु नारी पात्रों के इर्द गिर्द घुमती रहती है। उपन्यास की मुख्य नारी पात्र अल्मा, भूरी और कदमबाई है। किसी भी जाति वर्ग की स्त्रियां पितृसत्तात्मक समाज में कठपुतली की तरह अपना जीवन व्यतित कर रही हैं। नारी को तो पितृसत्तात्मक समाज द्वारा निर्मित नियम कानून और जिम्मेदारियों का निर्वाह हर हाल में करना पड़ता है। स्त्रियां अन्याय, अत्याचार, अपमान, मानसिक उत्पीड़न और शारीरिक शोषण आदि को सहने के लिए मजबूर है। नारी अपनी ही जाति के भीतर पुरुष वर्ग की अधिसत्ता में रहने को मजबूर है, तो कभी पूंजीपति ठेकेदार, कज्जा आदि के द्वारा शोषित होती रहती है। पितृसत्तात्मक समाज द्वारा अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु निर्मित परम्परा के कारण भी नारी का पतन होता रहा है और हो रहा है। प्रस्तुत शोध आलेख नारी समस्याओं जैसे ऊँच–नीच, अंधविश्वास, अनैतिक संबंध बेरोजगारी, निर्धनता और अशिक्षा को उजागर करता है। साथ ही नारी के सशक्तिकरण के लिए कुछ सुझाव भी प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

मुख्य शब्द

मैत्रेयी पुष्पा, अल्मा कबूतरी, नारी विमर्श, पितृसत्तात्मक समाज.

प्रस्तावना

उपन्यास में कथावस्तु का प्रारम्भ कदमबाई और कज्जा मंसाराम के एक तरफा और असफल प्रेम कथा से

प्रारम्भ होता है। कबूतरा और कज्जा दोनों समाज के रहन सहन खान पान में काफी अन्तर है, साथ ही ऊँच–नीच का भेदभाव, इसलिए दोनों समाजों के बीच आपसी टकराहट और द्वन्द्व स्पष्ट रुप से देखने को मिलता है। कज्जा मंसाराम के पूर्वजों ने दो बीघा जमीन पर कबूतरा जाति को मंडोराखुर्द नामक गाँव में बसाया था। मंसाराम कबूतरी कदमबाई से प्रेम करने लगता है, लेकिन यह प्रेम कथा न होकर दो अलग–अलग विचारधाराओं वाले समाज की टकराहट की कथा है। उपन्यास की कथावस्तु अल्मा, भूरी और कदमबाई के इर्द गिर्द घुमती रहती है। अल्मा उपन्यास की मुख्य नारी पात्र है, अल्मा कबूतरा रामसिंह की बेटी। रामसिंह तमाम संघर्षों और लांछनों के बावजूद भी शिक्षा ग्रहण कर शिक्षक बनता है एवं स्वतंत्र भरत में दमनकारी चक्र और व्यवस्था का शिकार बन जाता है, क्योंकि कबूतरा समुदाय को अंग्रेजों के समय से ही अपराधी समुदाय घोषित कर दिया गया है। जिसकी वजह से रामसिंह को पुलिस छोटी–छोटी वारदात के लिए पकड़ कर ले जाता है। रामसिंह शिक्षक बन जाने के बाद भी कबूतरा होने के अभिशाप से मुक्त नहीं हो पाता है, इसलिए रामसिंह अपनी बेटी अल्मा को पढ़ाता लिखाता है और अच्छा वातावरण देने का प्रयास करता है। अल्मा ध्यान लगाकर शिक्षा ग्रहण करती हैः ''अल्मा को अंगरेजी आती है। वह किताब में से शब्द ही नहीं, वाक्य भी पढ़ लेती है। कापी पर लिख भी देती है...।''[1] अल्मा अपने समुदाय के कार्यों से भलीभंति परिचित है, जहां अन्य कबूतरियां अपनी परम्परागत कार्यों को करते हुए आपराधिक गतिविधियों में सक्रिय रहती हैं वहीं अल्मा शिक्षा प्राप्त करती रहती है। अल्मा पढ़ाई, चित्रकला के साथ गृहकार्यों में भी निपुण है इसलिए उपन्यास का एक पात्र मोधिया गुरु कहता हैः ''अल्मा के हाथ में कला है। देखो, दीवारों पर क्या तस्वीरें बनाई हैं, बोलती सी हैं।''[2] अल्मा साहासी और महत्वाकांक्षी है इसलिए प्रत्येक कार्यों को निष्ठा और ईमानदारी से करती हैं। अपने पिता के अधूरे सपनों को पूरा करना चाहती है, परन्तु उसके जीवन में कई उतार–चढ़ाव आते हैं। वह निरंतर कठिनाईयों का सामना करते हुए आगे बढ़ने का प्रयास करती है।

अल्मा के पिता रामसिंह अपनी झूठी शान शौकत को बनाये रखने के लिए कर्ज लेता है और अपने द्वारा लिए गये कर्ज को उतारने के लिए अपनी पढ़ी लिखी पुत्री अल्मा को गिरवी रख देता है। अल्मा को गिरवी रखे जाने पर दुर्जन कहता हैः ''रामसिंह से जिन्दगी जोंक की तरह चिपट गई है, उसने बेटी को भी दाँव पर लगा दिया। हारे हुए जुआरी की तरह खेल रहा है, साला ढ़ोगी, नाटकबाज। अल्मा तू गिरवी रखी है, समझे रहना। भला इसमें बुराई भी नहीं। हम कबूतराओं में तो यह चलन रहा हैः जेवर, गहना, बासन और बेटी मुसीबत के समय काम आते हैं। अब तू मेरी खरीदी हुई।''[3] रामसिंह शिक्षक है और शिक्षा के महत्व को समझता भी है उसके बावजूद भी अपनी शिक्षित बेटी को गिरवी रखकर कर्ज से मुक्त होने का प्रयास करता है। अपनी झूठी शान को बनाये रखने के लिए पुरुष स्त्री को गिरवी रखने या बेचने से जरा भी नहीं हिचकता है। पितृसत्तात्मक समाज द्वारा अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु निर्मित परम्परा के कारण भी नारी का पतन हो रहा है। नारी को तो पितृसत्तात्मक समाज द्वारा निर्मित नियम कानून और जिम्मेदारियों का निर्वाह हर हाल में करना पड़ता है, तभी तो शिक्षित अल्मा भी अपने समाज की परम्परा के भेंट चढ़ा दी जाती है। प्रत्येक समाज पितृक अनुशासन में जकड़ी नारी को ही आदर्श नारी के रुप में मानता है। तसलीमा नसरीन नारी की स्थिति के विषय में लिखती हैंः ''जन्म के बाद से ही स्त्री–पुरुष निर्मित विभिन्न नियमों और नीतियों के प्रहार को झेलते हुए जिन्दा रहती है। स्त्री का शरीर लहुलुहान है। वह जिस रास्ते से होकर चलती है उस पर कांटे बिछे हुए हैं।''[4] पितृक नियमों कानूनों और अनुशासन का पालन करना नारी का परम धर्म एवं कर्तव्य बन गया है, क्योंकि पुरुषों ने नारी को प्रारम्भ से ही अपने ऊपर आश्रित रखा है।

अल्मा अपने कौम की औरतों की तरह अपने समुदाय के परम्परागत कार्य को अपनी नियति मानकर नहीं स्वीकारती है। लेकिन पिता के कर्ज उतारने के लिए अल्मा को शारीरिक शोषण का शिकार होना पडता है, क्योंकि अल्मा को गिरवी रखने के बाद सूरजभान के हाथों में बेच दिया जाता है। सूरजभान कबूतरा समाज के औरतों के देह का उपयोग अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए करता है। अल्मा को कबूतरा समाज की हो यह एहसास दिलाने के लिए उसकी बाहों में 'अल्मा कबूतरी' गुदवाता है। अल्मा अपने साथ होने वाले अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती है तो उसके साहस और हौसला को दबाने के लिए उसे एक कमरे में बन्द कर दिया जाता है तथा धीरजसिंह यादव को उसकी पहरेदारी के लिए नियुक्त किया जाता है। अल्मा का सौंदर्य भी शोषण का कारण बनता है। सूरजभान

सिंह कैद में अल्मा का बलात्कार करता है जिसके कारण अल्मा का गर्भपात हो जाता हैः ''गर्भ में राणा के अंग के गोले थे–चार महिने। दारु के नशे में लड़खड़ाते समरजभान ने ऐसी ताकत से भोग–संभोग किया कि अल्मा खून की पोखर हो गई। पागल बिल्ली–सी, बेअसर से झपटे मारती रही। बलिष्ट शरीर में खरोंचें पड़ी तब क्या कामांधता कम हो गई। वह दोगुनी ताकत से भिड़ गया था।''[5] नारी को नियंत्रित करने के लिए पुरुष बलात्कार जैसे घृणित कार्य को अपनाता है। राजेन्द्र यादव लिखते हैंः ''स्त्री अपनी बौद्धिक या अन्य उपलब्धियों के लिए जितनी हायतौबा मचाती रहे, पुरुष की जिद है कि साम, दाम, दण्ड, भेद से वह उसे कमर, कूल्हे, नितम्ब छातियों से ऊपर नहीं उठने देगा।''[6] पुरुष व्यवस्था नारी को हमेशा बंधन में रखना चाहता है, तभी तो अल्मा के विरोध करने पर उसका शारीरिक शोषण किया जाता है। राजेन्द्र यादव कहते हैंः ''औरत पुरुष के लिए सुमुखी, पयोधरा, क्षीण कटि, बिल्वस्तनी, सुभगा, भगवती है।''[7] प्रत्येक समाज की सामाजिक व्यवस्था नारी को सिर्फ वस्तु के रुप में मानती आयी है। पितृसत्तात्मक समाज में नारी सदियों से उपेक्षित होकर जीवन बिताने पर विवश होती आ रही है। लेखिका ने कबूतरा नारियों के अस्तित्व एवं अस्मिता के दर्द को अल्मा के माध्यम से यथार्थ रुप में चित्रित किया है।

सूरजभान के कैद से जैसे–तैसे भाग निकली अल्मा, सूरजभान के चमचा नत्थू द्वारा पकड़ी जाती है। नत्थू वकील हरिसिंह के साथ मिलकर अल्मा को सूरजभान के राजनैतिक प्रतिद्वन्दी समाज कल्याण मंत्री श्री रामशास्त्री के यहाँ पहुंचा देता है। यहाँ भी अल्मा को भोग्या के रुप में ही देखा जाता है। श्री रामशास्त्री को खुश करने के लिए अल्मा को निर्वस्त्र कर उसके सामने पेश किया जाता हैः ''धरती पर पड़ी अल्मा के सारे कपड़े चिथड़े–चिथड़े और फिर बेपर्द देह सूरजभान तलाशी लेने के बहाने इस देह का रोम–रोम नाप चुका था। उसके साथी परसराम ने शरीर का नग–नग टटोला था। नंगापन पहली बार लगता है, बार–बार नहीं, इस बात को हर औरत जानती है। अल्मा खड़ी की गई, समझ रही थी, खड़े होकर ज्यादा नंगी हो जाती है देह...। जो अंग छिपाने चाहिए, वे उघड़े पड़े हैं तो सिर झुकाकर भी क्या होगा।''[8] समाज कल्याण के लिए कार्य करने वाला मंत्री भी अल्मा का शारीरिक शोषण करता है। अल्मा अपने साथ होने वाले अत्याचारों से पीड़ित और दुखी है। भारतीय जीवन के यथार्थ का एक महत्वपूर्ण पक्ष परिवार और समाज में नारी के साथ किया जाने वाले भयावह स्थिति का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में देखने को मिलता है।

भूरी उपन्यास की मुख्य नारी पात्र है और अल्मा की दादी भी है। भूरी पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। भूरी, कबूतरा जनजाति का संबंध रानी पद्यमिनी और राणा प्रताप से जोड़ती है और कहती है कि हम सभी उनके संतान हैंः ''बस इसी तरह रानी आगे बढ़ती रही। जस नहीं था, अपजस कमाती रही। भूख और काम भड़कते, बेशर्मी घेर लेती। अपने सैनिकों से रानियों को, बाँदियों को, रक्कासाओं को गरभ रहे। रास्तों में, नदी–घाटियों में, पहाड़ पर्वतों पर बालक जन्में। वे ही सुन्दर और ताकतवर जाँबाज बप्पा रावल के काम आए। रानी पद्यमिनी के संतान वीरों के अंश...जंगलों में विचरने वाली चित्तौड़ से भागी हुई फौजी पीढ़ियाँ।''[9] भूरी पुराने विचारधारा के होने के बावजूद भी अपना और अपने पुत्र रामसिंह के जीवन को बदलने का भरपूर प्रयास करती है। भूरी कबूतरा जनजाति में बदलाव और विकास के लिए शिक्षा को आवश्यक मानती है। वह अपने पुत्र रामसिंह को शिक्षा दिलाने की चाहत में अनेक प्रकार के पीड़ा और शोषणों को झेलते हुए संघर्ष करती है। जहाँ अन्य कबूतरियाँ शराब बनाने और बेंचने का कार्य करती हैं वहीं भूरी अपनी बौद्धिक क्षमता का परिचय देती है। भूरी अशिक्षित होने के बावजूद भी शिक्षा के महत्ता को समझती है और पुत्र को शिक्षा दिलाने के लिए शारीरिक शोषण भी सहती हैः ''विद्या का दामन थाम है तो बेबसी और बदरंगतों से गुजरना होगा। माँ के घावों पर जैसा रामसिंह की छोटी–छोटी उँगलियों ने स्याही लेप दी हो। कटे–फटे बदन के चलते भी मोरनी–सी नाची फिरती। समय जाँच रहा थाः औरत में कितनी ताकत है। भूरी समझ रही थी, बेटे का उजाले–भरा रास्ता माँ के देह से गुजर रहा है।''[10] विधवा भूरी आर्थिक विपन्नता का शिकार है, फिर भी भूरी अपने सपनों को साकार करने का भरसक प्रयास करती है। भूरी के बौद्धिकता का हनन करने के लिए ही दीवान, दरोगा और सिपाही डराते धमकाते हैं तथा उसका शारीरिक शोषण भी करते है। उसके बावजूद भी भूरी साहस करके अपने पुत्र को विद्यालय भेजते हुए कहती हैः ''जिस दिन रामसिंह ने बाप का लाल खून नीली स्याही में बदलकर अपने हक में चार आँक लिख लिए, समझूँगी मुझमें राई भर कलंक नहीं। विद्या रत्न

के आगे देह का खजाना कुछ भी नहीं...। बस्ती की पहली माँ थी भूरी, जिसनें बेटे को कुल्हाड़ी–डंडा न थमाकर पोथी–पाटी पकड़ाई, और मन कागज की तरह हलका कर लिया।''[11] अशिक्षित होने पर भी भूरी की बौद्धिकता उच्च स्तर की है। वह अपने अस्तित्व का पहचान, अपने अधिकार के लिए संघर्ष करने को कहती हैः ''जिन्दगी से भाग कर सपनों में शरण लेने से कहीं अच्छा है, सपने को पाने की खातिर जिंदगी होमकर दो।''[12] भूरी कष्टों से भयभीत हो कर किसी के सामने भी हार स्वीकारती नहीं है। उसके समक्ष जीवन का लक्ष्य स्पष्ट है। उपन्यास के नारी पात्र संघर्ष करते हुए अपना जीवन बदलते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल भी होते है।

कदमबाई भी कबूतरा समाज की है। कदमबाई पुरानी पीढ़ी की भूरी के नक्ष कदम पर चलती है। वह आर्थिक विपन्नताओं के बीच ही अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत करती है, और अपने नवीन विचारधारा के कारण समाज में उपेक्षित भी है। कबूतरा एवं सभ्य समाज में उपेक्षित कदमबाई विपरीत परिस्थितियों से समझौता नहीं करती है बल्कि उनसे जूझते हुए स्वयं के लिए राहें बनाती हुई आगे बढ़ती है। भारतीय समाज में नारी को स्वयं निर्णय लेने का अधिकार एवं स्वतंत्रता नहीं है। अरविन्द जैन लिखते हैंः ''समाज व राजसत्ता के सभी क्षेत्रों में स्त्रियों की स्थिति न के बराबर है। निर्णय लेने के प्रायः सभी मुख्य केन्द्रों पर मर्दों का सर्वाधिकार सुरक्षित है, जिसकी वजह से स्त्री के हिस्से में सिर्फ एक अंधेरा कोना ही बचा रह गया है।''[13] स्त्रियों को सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों के नाम पर नियंत्रित किया जाता है। कबूतरा समाज की स्त्रियां अपमान भरा जीवन की जीती जागती दस्तावेज हैं क्योंकि सभ्य कहलाने वाला समाज ही इन स्त्रियों का हर प्रकार से शोषण करता है। कदमबाई के रुप यौवन पर मंसाराम मोहित हो जाता है और उसे पाने के लिए उसके पति जंगलिया को चोर साबित कर थाने में उसके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करा देता है। जंगलिया पुलिस से बचने के लिए अपनी पत्नी कदमबाई से रात के अंधेरे में मिलने का वादा कर बस्ती छोड़ जंगल में चला जाता है। जिस जगह पर जंगलिया कदमबाई से रात में मिलने आने वाला था उस जगह पर मंसाराम पहले ही पहुंच जाता है और साजिश कर जंगलिया की हत्या करवा देता है, और साजिश के तहत ही मंसाराम कदमबाई का शारीरिक शोषण भी करता है–''वादे के हिसाब से वह पास आया, वह छाया को देखते ही मदहोश हो गई। मदराई हुई गेहूँ की बालें पेट को गुदगुदा रही थीं, गुनगुनी बाहों ने उसका बदन बांध लिया। हाय, सदा घघरा उतारता आता था, आज पहले चोली के बटन खोल रहा है! एकांत में फुरसत पा गया। याद नहीं की घड़ियाँ गिनी–चुनी है। कदम ने घाघरा खुद ही नीचे को सरका दिया। बंद आँखों में अपने ही गोरे बदन की छाया जगमगाई। आँखों पर रखे हाथों की ऊँगलियों से झाँकना चाहती थी कि गर्म साँसों ने होठों पर कब्जा कर लिया। सारे डर–हया को दबाने के लिए उसने अपने पुरुष को भींच लिया। आनंद लोक में विचरने वाली कदमबाई, दोगुनी ताकत से भिड़ रही थी। मिलन की डोर से बँधी स्त्री हर लम्हें नई से नई मुद्राएँ अपनाने लगी। अब केवल वह ही वह थी, बाकी कोई न था। देह पर बोझ नहीं, सिर्फ लहरें थीं। बाँहें। कहाँ, भींचते जाने की होड़ के कसाब थे। धरती, धरती न थी देह के साथ उठती–दबती चादर! आसमान, आसमान न था।''[14] मंसाराम छल कपट के द्वारा कदमबाई के साथ बलात्कार करता है। कदमबाई अपने रुप सौंदर्य के कारण शारीरिक शोषण का शिकार होती है।

बलात्कार की शिकार कदमबाई में हिम्मत और हौसलाबुलंद है। मंसाराम के द्वारा अपने साथ किये गये घृणित कार्यों को जानती है और उससे घृणा भी करती है। कदमबाई तब भी उसके नाजायज बच्चे को जन्म देने का निर्णय लेती है और कहती हैः ''वह मन ही मन कहती है कि मंसाराम तुम कबूतरी को कमजोर करना चाहते हो या बरबाद।'' सहासी कदमबाई पुत्र जन्म के बाद मंसाराम से बदला लेने की भावना से अपने पुत्र राणा के मन में मंसाराम और उसके परिवार के खिलाफ घृणा भरना शुरु कर देती है। पुत्र मोह में मंसाराम कभी चावल तो कभी बच्चे के लिए पालना कदमबाई के घर पर भेजता है पर स्वाभिमानी कदमबाई सब चीजें वापस कर देती है। कबूतरा समुदाय के स्त्रियों की स्थिति दुर्दम्य है। अपने ही समाज के भीतर की सामाजिक, परम्परागत और कुरीतियां एवं कुप्रथाएं उनका दोहन करती हैं, तो कभी सभ्य समाज के लोग उनका मानसिक और शारीरिक शोषण करते है। लेखिका ने कदमबाई के साहस, स्वाभिमानी रुप और उसके संघर्षशील जीवन का यथार्थवादी चित्रण किया है।

निष्कर्ष

मैत्रेयी पुष्पा ने कबूतरा जाति के स्त्रियों के जीवन संघर्षों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। कबूतरा समाज में व्याप्त विकृतियों और अन्य सामाजिक कुरीतियों को लेखिका नें अल्मा कबूतरी उपन्यास में अल्मा, भूरी और कदमबाई के माध्यम से समाज के सामने रखने का सफल प्रयास किया है। इस उपन्यास को कबूतरा स्त्रियों की पीड़ा और उनके जीवन संघर्ष के जीवंत दस्तावेज कहा जा सकता है क्योंकि मैत्रेयी पुष्पा ने कबूतरा समाज के नारियों के जीवन का कटु सत्य को अत्यंत गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। लेखिका के बुन्देलखण्डी अशिक्षित नारी पात्रों में भी अस्तित्व और अस्मिता–बोध सहज रुप से विद्यमान है। यह शोध आलेख नारी शिक्षा का समर्थन, आर्थिक आत्मनिर्भरता, स्त्री की स्व–पहचान, अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत एवं जागरुकता आदि पर विशेष जोर देती हुई स्त्री हिंसा व यौन उत्पीड़न का विरोध दर्शाता है। उपन्यास में सशक्त नारी चरित्रों की भिन्न–भिन्न दृष्टि से सृष्टि किया गया है। सभी नारी पात्र विषम परिस्थितियों से संघर्ष कर स्वयं की पहचान बनाने और समाज में स्थापित होने में सफल होती हैं। अल्मा कबूतरी उपन्यास के नारी पात्र संघर्ष करते हुए अपना जीवन बदलते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होते दिखायी देते है।

संदर्भ सूची

1. पुष्पा, मैत्रेयी, *''अल्मा कबूतरी''*, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, 2000, पृ.सं. 125
2. वही, पृ.सं. 135
3. वही, पृ.सं. 244
4. नसरीन, तसलीमा, *''नष्ट लड़की नष्ट गद्य''*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं. 76
5. पुष्पा, मैत्रेयी, *''अल्मा कबूतरी''*, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, पृ.सं.135
6. यादव, राजेन्द्र, *''आदमी की निगाह में औरत''*, राजकमल प्रकाशन पृ.सं. 28
7. वही पृ.सं. 5
8. पुष्पा, मैत्रेयी, *''अल्मा कबूतरी''*, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, 2000, पृ.सं. 360–61
9. वही, पृ. सं. 129
10. वही, पृ. सं. 75
11. वही, पृ.सं. 74–75
12. गर्ग, मृदुला, *''अनित्य''*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ.सं. 188
13. त्यागी, मुक्ता, *''समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी–विमर्श''*, अमन प्रकाशन कानपुर, 2012, पृ.सं. 91
14. पुष्पा, मैत्रेयी, *''अल्मा कबूतरी''*, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, 2000, पृ.सं. 22

****